आत्मबल उससे प्रायश्चित करवाता है, वह अपने पद से इस्तीफा देकर किसान आन्दोलन की अगुवाई करता है। मुन्नी, सलोनी, आत्मानंद, गूदड़ चौधरी के साथ उसका सीना भी संगीन की नोक व बंदूक की गोली खाने के लिए सबसे आगे था।

गबन

'गबन', 'निर्मला' व 'सेवासदन' प्रेमचंद के ऐसे उपन्यास हैं जिनमें नारी–समस्या प्रधान है।

'गबन' में जालपा और रमानाथ ऐसे दम्पत्ती हैं जो सुखी हैं। जालपा को गहनों का बेहद शौक है। बचपन से उसने चन्द्रहार का सपना देखा है। ब्याह में गहने मिलते हैं लेकिन वे उसके अपने नहीं हो पाते। उसका मन रखने के लिए रमानाथ और उसके पिता ने उसे ठगा था और एक दिन रमानाथ उन्हें चुरा लेता है और वे सर्राफ़ को वापस कर दिए जाते हैं। रमानाथ चुंगी की नौकरी करता है। जालपा की मित्र रतन उसे कंगन खरीदने के लिए रुपये देती है। वे रुपये भी सर्राफ के यहाँ पहुँच जाते हैं। रतन बराबर तकाज़े करती है। एक दिन जालपा चुंगी के रुपये उठाकर रतन को दे देती है गबन में पकड़े जाने के भय से जालपा से सच्ची बात कहने की हिम्मत न होने से रमा भाग खड़ा होता है। बूढ़े खटीक देवीदीन के यहाँ आश्रय पाता है सरकारी गवाह बनकर वह क्रान्तिकारियों को सजा कराता है लेकिन जालपा से फटकारे जाने पर जो उसे ढूँढ़ती हुई कलकत्ता पहुँच गयी है– वह जज के सामने सच्ची बात कह देता है। मुकदमा फिर होता है और क्रान्तिकारी रिहा कर दिये जाते हैं। अंत में रमा, जालपा, देवीदीन, इलाहाबाद में आकर खेती–बाड़ी करने लगते हैं।

''प्रेमचंद के शब्द ही सरकारी गवाह और देशभक्त नारी के मिलन की पेचीदा परिस्थिति को इतने सीधे ढंग से पाठक के हृदय में उतार सकते थे। कहीं अलंकारों का बोझ नहीं, कहीं भारी–भरकम शब्दावली नहीं। परिस्थिति का सारा तनाव, जालपा का आहत आत्मसम्मान, रमा की आत्महीनता, अंग्रेज़ों के पुलिसराज

की कुरूपता, हिन्दुस्तान के शहीदों की गौरवशाली परंपरा– थोड़े ही शब्दों में यह सब व्यंजित करके प्रेमचंद ने जालपा–रमा की भेंट के इस दृश्य को हिन्दी कथा–साहित्य में चिरस्मरणीय बना दिया है।..... जिस देश में जालपा जैसी वीर नारी हो, देवीदीन जैसा सदा जवान रहने वाला सच्चा देशभक्त हो, वहाँ गरीबों को लूटकर विलायत का घर भरने का काम ज्यादा दिन तक नहीं चल सकता।''[141]

रमानाथ

रमानाथ मध्यम वर्ग का टाइप चरित्र है। वह अपने समूचे वर्ग का प्रतिनिधि है। रमानाथ अपनी बाल्यावस्था से ही परिस्थिति का दास होना स्वीकार करता है। उसमें इतना दिखावा और विडम्बना है कि वह अपनी पत्नी से भी घर की असल हालत छिपाता और अपने धनी होने की डींग हाँकता है। इसी कारण वह हैसियत से बढ़कर खर्च करता है, रिश्वत लेता है, गहने कर्ज के रूप में लेता है, और गबन के आरोप में फँसकर लज्जा के मारे घर से भाग जाता है। न चाहते हुए भी पुलिस का मुखबिर बन जाता है। रिश्वत, झूठ, मर्यादा बनाए रखने के लिए दाँव–घात – ये सब रमा के चरित्र की विशेषताएँ हैं जो संपत्ति की पूजा करने वाले समाज में पैदा हुई हैं। परिस्थितियाँ उसे गहरे खड्डे की ओर घसीटती ले जा रही थीं, जिसे वह स्वयं अनुभव कर रहा था लेकिन उसमें वह साहस, दिलेरी, परिस्थितियों की विजय–कामना ही नहीं थी जो मनुष्य के जीवन का आभूषण है। फिर भी वह दोषों ही दोषों का भण्डार नहीं है। कहीं इंसानियत के अंकुर उसके हृदय में दबे पड़े हैं। जालपा की फटकार सुनकर अपना बयान वापस लेने का निश्चय कर लेता है। उसके चरित्र में काफी परिवर्तन होता है।

जब नदी में एक स्त्री अपनी बच्ची को लिए हुए डूबती दिखाई देती है, तब रमा एक बार फिर अपनी कायरता का परिचय देता है। 'जोहरा' कूदने को तैयार होती है, तब वह लजाकर कहता है– ''जाने को मैं तैयार हूँ, लेकिन वहाँ तक पहुँच भी सकूँगा, इसमें संदेह है। जब जोहरा डूबने लगती है तो रमा भी पानी में कूदता

है और ज़ोर–ज़ोर से पुकारने लगा– जोहरा! जोहरा मैं आता हूँ। किनारे पर जालपा खड़ी हाय–हाय कर रही थी। यहाँ तक कि वह भी पानी में कूद पड़ी। रमा आगे न बढ़ सका। एक शक्ति आगे खींचती थी, एक पीछे। आगे की शक्ति में अनुराग था, निराशा थी, बलिदान था। पीछे की शक्ति में कर्तव्य था, स्नेह था, बन्धन था। बन्धन ने रोक लिया। वह लौट पड़ा।''[142]

देवीदीन

'गबन' उपन्यास में देवीदीन का चरित्र सर्वाधिक सशक्त रूप में चित्रित हुआ है। ह्रदय की विशालता, मानव–प्रेम, परोपकार की भावना, सहानुभूति और हँसोड़ प्रकृति उसके आदर्श हैं। वह सामाजिक एवं आर्थिक रूप से कष्टपूर्ण जीवन भोग रहा है, किन्तु उसका व्यक्तित्व मानवीय गुणों से परिपूर्ण है। टिकट के पैसे देने के बाद जब देवीदीन रमानाथ को कलकत्ते में अपने घर ठहरने का निमन्त्रण देता है तो उसकी सहानुभूति और मनुष्यतापूर्ण भावना से हमारा परिचय हो जाता है। ''देवीदीन की सहानुभूति किसी विशेष व्यक्ति की दुःखपूर्ण परिस्थिति तक ही नहीं रूक जाती– वह आवश्यकता पड़ने पर समूचे राष्ट्र के दुःख को, गुलामी को भी अपने में समाहित कर लेती है। असहयोग आन्दोलन में न केवल उसने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार ही नहीं किया बल्कि अपने दो नवजवान पुत्रों की बलि देकर काफी बड़ी कीमत भी भारत की आज़ादी के लिए चुकाई।''[143] देवीदीन राष्ट्रीय विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करने वाला सर्वाधिक सशक्त एवं प्रमुख पात्र है। देवीदीन समाज का एक जागरूक व्यक्ति है और उसे समाज का सच्चा अनुभव प्राप्त है। देवीदीन खटीक जाति का है। अपनी पत्नी जग्गो से बहुत प्रेम करता है। उनका यह प्रेम एक साथ मेहनत–मजदूरी करने, दुःख–सुख सहने में पैदा हुआ है। प्रेमचंद ने देवीदीन का चरित्रांकन एक निर्भीक पात्र के रूप में किया है। वह दूसरों के विचारों अथवा धमकियों से भयभीत होने वाला नहीं है। देवीदीन स्वदेशी आन्दोलन का पक्का समर्थक है। उसकी इच्छा है कि सम्पूर्ण देश की जनता देशभक्त एवं ईमानदार बने। वह चाहता है कि देश की स्वतन्त्रता के बाद शोषण

का चक्र समाप्त हो जाना चाहिए और सबके प्रति सामाजिक न्याय की भावना होनी चाहिए। तत्कालीन सफेदपोश नेताओं के जीवन पर प्रकाश डालते हुए वह कहता है कि देशभक्ति के नाम पर सिर्फ दिखावा करते हैं।

'देवीदीन के चरित्र के माध्यम से उपन्यासकार ने राष्ट्रीयता की भावना एवं आदर्श जीवन के तत्त्वों को अभिव्यंजित किया है। उसके माध्यम से उन्होंने समाज के निम्न वर्ग को भी देश की मुख्य धारा से जोड़ा है। स्वतन्त्रता आन्दोलन में निम्न वर्ग की भूमिका का अभिव्यंजन इस पात्र के माध्यम से हुआ है।

सेवासदन

'सेवासदन' एक सामाजिक उपन्यास है और नारी समस्या को लेकर लिखा गया है। इसके साथ ही मध्यम वर्ग के लोगों की आर्थिक कठिनाइयों और सामाजिक बन्धनों पर प्रकाश डाला गया है और अभिजात वर्ग की आत्म–विडम्बना, ढोंग और बगुला–भक्ति की अच्छी कलई खोली गई है। 'सेवासदन' पहला उपन्यास है जिसमें चरित्र–चित्रण और मनोगत भावों को व्यक्त करके प्रेमचंद ने हिन्दी जगत में अपना लोहा मनवाया। पाठकों ने इसका खूब स्वागत किया और इसे हिन्दी जगत का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास घोषित किया। उपन्यास मूलतः सुधारवादी है, लेकिन प्रेमचंद ने समाज में फैली हुई बुराइयों का यथार्थ कारण ढूढ़ निकाला है और उसके लिए व्यक्तियों को दोषी न ठहराकर समाज व्यवस्था को जिम्मेदार ठहराया है। प्रेमचंद ने इस उपन्यास में विशेष रूप से वेश्याओं की समस्याओं को उठाया है। वे वेश्यावृत्ति को समाज का कलंक और कोढ़ समझते थे और उसका अंत चाहते थे। झूठे धर्म और साम्प्रदायिकता के साथ–साथ प्रेमचंद ने झूठे सुधारवादियों की पोल खोली है। प्रेमचंद ने इस उपन्यास के माध्यम से अनमेल विवाह और दहेज प्रथा आदि समस्याओं पर चोट की है।

"'सेवासदन' की मुख्य समस्या भारतीय नारी की पराधीनता है। प्रेमचंद ने नकली आदर्शों की रामनामी खींचकर पंडितों और मौलवियों, समाज के प्रतिष्ठित